Kam Bolne Ke Fayde (Hindi)

مکتبۃ المدینہ ہند
MAKTABATUL MADINA INDIA

हफ़्तावार रिसाला : 473
Weekly Booklet : 473

कम बोलने के फ़ायदे

(अमीरे अहले सुन्नत की किताब गुफ़्तगू के आदाब से सातवीं क़िस्त)

(सफ़्हात : 16)

गुफ़्तगू की चार क़िस्में 05
बोलने वाला बारहा पछताता है 07
घर अम्न का गहवारा कैसे बने ! 12
ख़ामोशी की बरकत से दीदारे मुस्तफ़ा 14

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

कम बोलने के फ़ायदे[1]

दुआए अत्तार : या अल्लाह पाक ! जो कोई 16 सफ़हात का रिसाला "कम बोलने के फ़ायदे" पढ़ या सुन ले उसे कम बोलने और अच्छे काम ज़ियादा करने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमा और मां बाप व ख़ानदान समेत उस की बे हिसाब बख़्शिश फ़रमा। اٰمِيْن بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيّٖن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना अबुल मुज़फ़्फ़र मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ख़य्याम समरक़न्दी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं एक रोज़ रास्ता भूल गया, अचानक एक साहिब नज़र आए और उन्हों ने कहा : "मेरे साथ आओ।" मैं उन के साथ हो लिया। मुझे गुमान हुवा कि येह हज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام हैं। मेरे इस्तिफ़सार (यानी पूछने) पर उन्हों ने अपना नाम ख़िज़्र बताया, उन के साथ एक और बुज़ुर्ग भी थे, मैं ने उन का नाम दरयाफ़्त किया तो फ़रमाया : येह इल्यास (عَلَيْهِ السَّلَام) हैं। मैं ने अ़र्ज़ की : अल्लाह पाक आप पर रहमत फ़रमाए, क्या आप दोनों हज़रात ने सरवरे काएनात, शहन्शाहे मौजूदात, मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की है ? उन्हों ने फ़रमाया : हां ! मैं ने अ़र्ज़ की : सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सुना हुवा इरशादे पाक बताइए ताकि मैं आप से रिवायत कर सकूं। उन्हों ने फ़रमाया कि हम ने रसूले ख़ुदा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

---

[1]...येह मज़्मून अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की किताब "गुफ़्तगू के आदाब" सफ़हा 93 ता 103 से लिया गया है।

को येह फ़रमाते सुना कि जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ेगा अल्लाह पाक उस का दिल तरो ताज़ा रखेगा और उस के दिल को मुनव्वर फ़रमाएगा और जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़े उस का दिल निफ़ाक़ से उसी त़रह़ पाक किया जाता है जिस त़रह़ पानी से कपड़ा पाक किया जाता है नीज़ जो शख़्स "صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد" पढ़ता है तो लोग उस से मह़ब्बत करते हैं अगर्चे पहले नफ़रत करते थे और "صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد" पढ़ने वाला अपने ऊपर रह़मत के 70 दरवाज़े खोल लेता है। (القول البدیع، ص277 ملتقطاً)

ज़माने वाले सताएं, दुरूदे पाक पढ़ो
जहां के ग़म जो रुलाएं, दुरूदे पाक पढ़ो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

ना फ़रमानी का एक लफ़्ज़ भी दोज़ख़ में पहुंचा सकता है

बाज़ अवक़ात मुसलमान बे ख़याली में ऐसी प्यारी प्यारी बात कर डालता है जिस की ख़ुद उसे भी ख़बर नहीं होती और अल्लाह करीम उस से राज़ी हो चुका होता है और कोई तो बे परवाई में एक आध ऐसी बात बक डालता है कि उसे इस की सुध भी नहीं होती ह़ालांकि उस बकवास की नुहूसत से तबाही उस का मुक़द्दर बन चुकी होती है। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है, ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बेशक बन्दा कभी अल्लाह पाक की रिज़ामन्दी का कोई ऐसा कलिमा (यानी सेन्टेन्स-SENTENCE) कह देता है कि जिस की त़रफ़ उसे ध्यान भी नहीं होता और उस की वजह से अल्लाह पाक उस के बहुत से दरजात (ग्रेड्ज़ - GRADES) बुलन्द फ़रमा देता है और बेशक बन्दा कभी अल्लाह पाक की ना फ़रमानी का कोई ऐसा

कलिमा (SENTENCE) कह गुज़रता है कि उस की त़रफ़ उस को ध्यान भी नहीं होता और इस की वजह से दोज़ख़ में गिरता चला जाता है।

(مشکوۃ،2/189،حدیث:4813)

बुरी सोह़बत ने बरबाद कर के रख दिया था

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! अभी दिल हिला देने वाली ह़दीसे पाक बयान हुई, वाक़ेई ज़बान बहुत ही सोच समझ कर चलानी चाहिए, ज़बान की ह़िफ़ाज़त का ज़ेहन बनाने में दावते इस्लामी का निहायत अहम किरदार है, हम सभी को दावते इस्लामी के दीनी माह़ौल में रहते हुए ख़ूब दीनी काम करने चाहिएं और हमेशा बुरी सोह़बत से दूर रहना चाहिए। बुरी सोह़बत से बरबाद होने के बाद हिदायत मिलने पर आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बते बा बरकत में आने वाले एक ख़ुश नसीब इस्लामी भाई की "मदनी बहार" सुनिए चनान्चे एक इस्लामी भाई बुरे दोस्तों की सोह़बत की वजह से बद अख़्लाक़ी और गुनाहों के दलदल में फंस चुके थे, उन्हें गाने सुनने का बहुत ज़ियादा शौक़ था और फिर येह शौक़ इतना बढ़ा कि वोह मुख़्तलिफ़ प्रोग्रामों में ख़ुद गाने गा कर लोगों से दाद वुसूल करने लगे। इस के इ़लावा चरस पीना उन का मामूल था, गुनाहों की आ़दत इतनी ज़ियादा बढ़ चुकी थी कि फ़ुह़श गोई (यानी बे ह़याई की बातें) करना और झूट बोलना उन के नज़्दीक गोया कोई ऐ़ब ही न था, ख़ुश क़िस्मती से 2005 में उन्हें दावते इस्लामी के तीन दिन के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की सआ़दत ह़ासिल हुई जहां येह ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के मुरीद भी बने, लेकिन इज्तिमाअ़ से लौटने के बाद वोह दोबारा बुरे दोस्तों की सोह़बत में जा बैठे और फिर से गुनाहों का सिल्सिला जारी हो गया। एक दिन अचानक उन्हें कोई ज़ेहनी मरज़ लाह़िक़ हो गया जिस की वजह से उन्हें सूरए फ़ातिह़ा भी याद न रही और वोह अपने ही घर में पागलों की त़रह़ रहने लगे, अपने वालिदैन को अपना दुश्मन समझने लगे, उन की ह़ालत इतनी

ख़राब हो गई कि अपने मरज़ की वजह से न वोह खाना खा सकते थे और न सो सकते थे, बिल आख़िर उन्हें नफ़्सियाती अस्पताल में दाख़िल करवा दिया गया। उन की अम्मीजान से अपने बेटे की येह ह़ालत देखी नहीं जाती थी और वोह उन के लिए कसरत से दुआएं और वज़ीफ़े करती रहतीं, एक रात उन की अम्मीजान के ख़्वाब में एक बुज़ुर्ग तशरीफ़ लाए और कुछ अ़मल करने को कहा। उन की अम्मीजान बिला नाग़ा वोह अ़मल करने लगीं, उस अ़मल की बरकत से आहिस्ता आहिस्ता उन इस्लामी भाई की ह़ालत बेहतर होने लगी और वोह जिस्मानी त़ौर पर सेह़तयाब होने लगे और اَلحمدُ لِلّٰہ एक दिन वोह भी आया कि उन्हों ने दावते इस्लामी के सुन्नतें सीखने सिखाने के क़ाफ़िले में सफ़र किया, जहां उन्हें आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत में गुनाहों से बचने का ज़ेहन मिला और वोह दीनी माह़ौल में रचते बसते चले गए और दावते इस्लामी के दीनी काम करते करते डिवीज़न सत़ह़ पर मदनी इन्आ़मात (जिसे अब "नेक आमाल" कहते हैं) के ज़िम्मेदार भी बने।

ऐ आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत ! बयान कर्दा मदनी बहार हमें दावते फ़िक्र दे रही है कि हम अपनी सोह़बतों और दोस्तियों पर नज़रे सानी कर लें, कहीं ऐसा तो नहीं कि नेक आमाल से दूरी की वजह हमारी बुरी दोस्ती और गन्दी सोह़बत हो ! ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : "बुरों की सोह़बत फ़ायदा और अच्छों की सोह़बत नुक़्सान कभी नहीं दे सकती। भट्टी वाले से मुश्क नहीं मिलेगा, गर्मी और धुवां ही मिलेगा। मुश्क (की ख़ुश्बू) वाले से न गर्मी मिले न धुवां, मुश्क या ख़ुश्बू ही मिलेगी।" मज़ीद फ़रमाते हैं : "ह़त्तल इम्कान बुरी सोह़बत से बचो कि येह दीनो दुनिया बरबाद कर देती है और अच्छी सोह़बत इख़्तियार करो कि इस से दीनो दुनिया संभल जाते हैं। सांप की सोह़बत जान लेती है। बुरे यार की सोह़बत ईमान बरबाद कर देती है।" (मिरआतुल मनाजीह़, 6/591)

ह़ज़रते मौलाना रूम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं :

सोह़बते सालेह़ तुरा सालेह़ कुनद

सोह़बते त़ालेह़ तुरा त़ालेह़ कुनद

यानी अच्छे की सोह़बत तुझे अच्छा और बुरे की सोह़बत तुझे बुरा बना देगी।

(मस्नवी, दफ़्तर अव्वल, स. 22)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

बात को फ़ुज़ूलिय्यात से पाक करने का बेहतरीन नुस्ख़ा

गुफ़्तगू में कमी लाने के ख़्वाहिश मन्दों के लिए अपनी बात को फ़ुज़ूल लफ़्ज़ों और मुख़्तलिफ़ ख़राबियों से पाक करने के लिए "एह़याउल उ़लूम" में कुछ इस त़रह़ लिखा है : गुफ़्तगू की चार क़िस्में हैं : ﴾1﴿ मुकम्मल नुक़्सान देह बात ﴾2﴿ मुकम्मल फ़ायदेमन्द बात ﴾3﴿ ऐसी बात जो नुक़्सान देह भी हो और फ़ायदेमन्द भी और ﴾4﴿ ऐसी बात जिस में न फ़ायदा हो न नुक़्सान तो पहली क़िस्म की बात जो कि मुकम्मल यानी सारी की सारी नुक़्सान देह है उस से हमेशा बचना ज़रूरी है और इसी त़रह़ तीसरी क़िस्म वाली बात कि जिस में नुक़्सान व फ़ायदा दोनों हैं, इस से भी बचना लाज़िम है और जो चौथी क़िस्म है वोह फ़ुज़ूलिय्यात में शामिल है कि उस का न फ़ायदा है न नुक़्सान, लिहाज़ा ऐसी बात में वक़्त ज़ाएअ़ करना भी एक त़रह़ का नुक़्सान ही है, इस के बाद सिर्फ़ दूसरी ही क़िस्म की बात रह जाती है यानी बातों में से तीन चौथाई (यानी 75%) क़ाबिले इस्तिमाल नहीं हैं और दूसरी क़िस्म की बात जो कि फ़ायदेमन्द है बस वोही क़ाबिले इस्तिमाल है मगर इस क़ाबिले इस्तिमाल बात के अन्दर बारीक क़िस्म की रियाकारी, बनावट, ग़ीबत, तोहमत, झूटे मुबालग़े, "मैं मैं करने की आफ़त" यानी अपनी फ़ज़ीलत व

पाकीज़गी बयान कर बैठने वग़ैरा वग़ैरा ख़त़रे मौजूद हैं, मज़ीद येह कि फ़ायदेमन्द गुफ़्तगू करते करते फ़ुज़ूल बातों में जा पड़ने फिर उस के ज़रीए़ और आगे बढ़ते हुए ख़ुदा न ख़्वास्ता इस में गुनाह हो जाने वग़ैरा वग़ैरा के ख़ौफ़ और डर शामिल हैं और उन ख़राबियों का शामिल होना ऐसा बारीक है जिस का अक्सर इ़ल्म नहीं होता, लिहाज़ा इस क़ाबिले इस्तिमाल बात के ज़रीए़ भी इन्सान ख़त़रात में घिरा रहता है। (احیاءالعلوم،138/3)

दुन्यवी बात मुंह से निकल जाए तो कुछ ज़िक्रुल्लाह कर लेना चाहिए

अल्लाह पाक के नेक बन्दे ख़ालिस दुन्यवी (ग़ैर फ़ुज़ूल) बातों को भी अच्छा न समझते थे, जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्माद बिन सलमा رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ जब कोई दुन्यवी बात कह देते तो इस के बाद ''سُبۡحٰنَ اللّٰہِ وَالۡحَمۡدُ لِلّٰہِ وَلَاۤ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکۡبَرُ'' पढ़ते फिर फ़रमाते : "हमारे अस्लाफ़ (यानी गुज़रे हुए बुज़ुर्गाने दीन) किसी मजलिस (यानी बैठक) में ख़ालिस दुनियावी कलाम करना अच्छा न जानते थे, जब तक कि उस के साथ कोई नेक बात न मिला लेते।" (تنبیہ المغترین، ص190)

जब रह़मत की तवज्जोह हटा दी जाती है

बातूनी शख़्स को तो डर जाना चाहिए कि कहीं अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने मेरी त़रफ़ से रह़मत की तवज्जोह तो नहीं हटा दी ! चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ मारूफ़ करख़ी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : "इन्सान का बेकार बातें करना अल्लाह पाक का उस को बे मदद छोड़ देने के बाइ़स होता है।" (تنبیہ المغترین، ص190)

हुस्ने अख़्लाक़ और दीन की समझ से महरूम

मुनाफ़िक़ दुनियादारी के मुआमले में कितना ही अक़्लमन्द सही मगर चूंकि वोह हुस्ने अख़्लाक़ और दीन की समझ बूझ से महरूम होता है इस लिए यक़ीनन वोह बदनसीब व महरूम है। सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशादे गिरामी है कि मुनाफ़िक़ में दो ख़स्लतें जमा नहीं होतीं : ﴿1﴾ हुस्ने अख़्लाक़ और ﴿2﴾ दीन की समझ। (ترمذی،4/313،حدیث:2693)

बोलने वाला बारहा पछताता है

एक नसीहत आमोज़ अ़रबी शेर का तर्जमा है : "इ़ल्म ज़ीनत (यानी ख़ूबसूरती) है और ख़ामोशी सलामती और जब कभी बोलना पड़े तो ज़ियादा न बोलो। तुम ने ख़ामोशी पर कभी शरमिन्दगी नहीं उठाई होगी। मगर बोल कर बहुत बार नदामत (यानी शरमिन्दगी) उठाई होगी।" (تنبیہ الغافلین،ص116)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई़ येह ह़क़ीक़त है कि ख़ामोश रहने में नदामत (यानी शरमिन्दगी) का इम्कान (यानी CHANCE) बहुत कम है जबकि मौक़ा बे मौक़ा "बोल पड़ने" की आ़दत से बारहा SORRY कहना पड़ता और मुआ़फ़ी मांगनी पड़ती है या फिर दिल ही दिल में पछतावा होता है कि मैं यहां न बोला होता तो अच्छा था क्यूंकि मेरे बोलने पर सामने वाले की झिजक उड़ गई, खरी खरी सुननी पड़ी, फ़ुलां नाराज़ हो गया, फ़ुलां का चेहरा उतर गया, फ़ुलां का दिल दुख गया, अपना इम्प्रेशन (IMPRESSION) भी ख़राब पड़ा वग़ैरा वग़ैरा। ह़ज़रत मुह़म्मद बिन नज़्र ह़ारिसी رَحْمَۃُ اللّٰهِ عَلَيْه से कितनी प्यारी बात बयान की गई है : "ज़ियादा बोलने से (इ़ज़्ज़त व) वक़ार जाता रहता है।"

(موسوعۃ لابن ابی الدنیا،7/60،قول نمبر:52)

"बोल कर" पछताने से "न बोल कर" पछताना अच्छा

सच है, "बोल कर" पछताने से "न बोल कर" पछताना अच्छा और "ज़ियादा खा कर" पछताने से "कम खा कर" पछताना अच्छा कि जो बोलता रहता है वोह मुसीबतों में फंसता रहता है और जो ज़ियादा खाने का आ़दी होता है वोह अपना मेदा तबाह कर बैठता, अक्सर मोटापे का शिकार हो जाता और त़रह़ त़रह़ की बीमारियों की ज़द में रहता है, अगर जवानी में अमराज़ से क़दरे बचत हो भी गई तो जवानी ढलने के बाद बसा अवक़ात "सरापा मरज़" बन जाता है। ज़ियादा खाने के नुक़्सानात और मोटापे के इ़लाज वग़ैरा जानने के लिए फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द अव्वल के बाब "भूक के फ़ज़ाइल" का मुत़ालआ़ फ़रमाइए।

ज़ियादा बोलने वाले को नदामत उठानी पड़ती है

बुरी सोह़बत बरबाद करती, बुरी जगह जाने वाला बदनाम होता और बातूनी आदमी को आख़िरेकार शरमिन्दगी उठानी पड़ती है। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना लुक़्मान ह़कीम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के बारे में कहा गया है, उन्हों ने अपने बेटे से फ़रमाया : ऐ बेटे ! ﴾1﴿ जो शख़्स बुरे आदमी का दोस्त और साथी बनता है उसे सलामती नहीं मिलती और ﴾2﴿ जो बुरी जगह पर जाता है वोह बदनाम होता है और ﴾3﴿ जो अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त नहीं करता वोह नादिम (यानी शरमिन्दा) होता है। (تنبیہ الغافلین، ص115)

जो तोल कर बोलता है फ़ुज़ूल बातों से बच जाता है

अ़क़्लमन्द की शान येही है कि सोच समझ कर बात करे, अपना वक़्त फ़ुज़ूल जाएअ़ न करे, अपने मुआ़मलात पर पूरी तवज्जोह रखे, इस त़रह़ उसे फ़ुज़ूल बातों का मौक़ा ही कहां मिलेगा ! ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी

رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ से रिवायत है कि मैं ने सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुवाल किया कि इब्राहीमी सहीफ़ों (यानी ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیۡہِ السَّلَام पर नाज़िल होने वाली आस्मानी किताबों) में क्या मज़ामीन थे ? फ़रमाया : वोह सब इ़ब्रत व नसीह़त पर मुश्तमिल थे (उन में येह भी था), अ़क़्लमन्द पर लाज़िम है कि अपने ज़माने के ह़ालात से वाक़िफ़ हो और अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त करे। बातें करने के बजाए काम करे और उस का कलाम फ़ुज़ूल बातों पर मुश्तमिल न हो।

(अल्लाह वालों की बातें, 1 /319, 222/1 ،حلیۃ الاولیاء)

कैंसर की मरीज़ा सेह़तयाब हो गई

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ ! दावते इस्लामी के दीनी माह़ौल की भी क्या ख़ूब बरकतें हैं, इन बरकतों का अन्दाज़ा लगाने के लिए एक "मदनी बहार" सुनिए और झूमिए : ओल्ड कानपुर (हिन्द) के एक इस्लामी भाई की ख़ुशबख़्ती कि उन्हें दावते इस्लामी के दीनी माह़ौल से वाबस्तगी नसीब हुई। उन की नानीजान की त़बीअ़त बहुत नासाज़ थी, बहुतेरा इ़लाज करवाया मगर शिफ़ा न मिल सकी, डॉक्टरों ने कहा : "इन्हें सरत़ान (यानी CANCER) है और साथ ही साथ येह ख़बर भी सुना दी कि येह चन्द दिनों की मेहमान हैं।" इस ख़बरे वह़शत असर से येह घबरा गए, उन्हों ने अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त के भरोसे नानीजान की सेह़्ह़तयाबी की दुआ़ मांगने के लिए दावते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की और रो रो कर दुआ़ की : "या अल्लाह पाक ! यहां जो भी तेरा मह़बूब (यानी प्यारा) बन्दा है उस के सदक़े मेरी प्यारी नानीजान को सेह़त की नेमत अ़त़ा फ़रमा।" अगले रोज़ जब नानीजान की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए तो उन की ख़ुशी की इन्तिहा न रही क्यूंकि इज्तिमाअ़ में आ़शिक़ाने रसूल के दरमियान मांगी जाने

वाली दुआ की बरकत यूं ज़ाहिर हुई कि उन की नानीजान अब न सिर्फ़ बैठ रही थीं, बल्कि तन्दुरुस्त हो कर चल फिर रही थीं।

तेरा शुक्र मौला दिया दीनी माहौल — न छूटे कभी भी ख़ुदा दीनी माहौल

सलामत रहे या ख़ुदा दीनी माहौल — बचे बद नज़र से सदा दीनी माहौल

(वसाइले बख़्शिश, स. 647)

कोई बीमारी ला इलाज नहीं

سُبۡحٰنَ اللّٰہ ! अल्लाह पाक हर शै पर क़ुदरत रखता है, वोह चाहे तो कैंसर भी ठीक हो जाए। यक़ीनन बुढ़ापे और मौत के सिवा हर बीमारी का इलाज है। हां ! येह बात अलग है कि कई अमराज़ का इलाज अतिब्बा (यानी डॉक्टर्ज़) अब तक दरयाफ़्त नहीं कर पाए। लिहाज़ा येह कहने के बजाए कि "फ़ुलां मरज़ का इलाज नहीं है" मुनासिब येह है कि यूं कहा जाए कि हमारे पास इस बीमारी का इलाज नहीं या डॉक्टर्ज़ अभी तक इस मरज़ का इलाज दरयाफ़्त नहीं कर सके। बहरहाल रब्बे करीम चाहे तो दवा शिफ़ा का ज़रीआ बने वरना ऐन मुम्किन है कि वोही दवा मौत का सबब बन जाए ! और येह भी अक्सर देखा जाता है कि माहिर डॉक्टर की तरफ़ से मिलने वाली दुरुस्त दवा के बावुजूद किसी किसी मरीज़ को मन्फ़ी असर (REACTION) हो जाता है।

कैंसर का रूहानी इलाज

अव्वल आख़िर ग्यारह (11) बार दुरूदे इब्राहीम और दरमियान में "सूरए मरयम" पढ़ कर पानी पर दम कीजिए, ज़रूरतन दूसरा पानी मिलाते रहिए, मरीज़ वोही पानी सारा दिन पिए, येह अमल चालीस (40) दिन तक बिला नाग़ा करते

रहिए, اِنْ شَآءَ الله शिफ़ा ह़ासिल होगी। (दूसरा भी पढ़ कर दम कर के मरीज़ को पिला सकता है)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

बेवुक़ूफ़ जब तक ख़ामोश रहता है पहचाना नहीं जाता

ख़ामोश रहने से बाज़ अवक़ात लोगों पर धाक बैठी रहती है, लोग इ़ज़्ज़त की निगाह से देखते हैं और जो हर वक़्त बोलता रहता है उस का रोब ख़त्म हो जाता है और उस की बात का "वज़्न" भी नहीं रहता। चुनान्चे इब्राहीम नख़ई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : "जो शख़्स ग़ौर करे तो वोह तमाम अहले मजलिस से अशरफ़ (यानी शरीफ़ तरीन) और ज़ियादा रोबदार उस शख़्स को पाएगा जो अक्सर ख़ामोश रहता हो, क्यूंकि ख़ामोशी आ़लिम के लिए ज़ीनत है और जाहिल के लिए पर्दा।" (تنبیہ المغترین، ص190)

आधी रात तक अगर सूरज न डूबे तो ? (वाक़िआ़)

ऐ आशिक़ाने रसूल ! वाक़ेई ज़बान बन्द रखने से भरम क़ाइम रहता है, इन्सान जैसे ही बोलना शुरू करता है, उस का "भाव" (यानी समझदारी का) पता चल जाता है। कहते हैं कि ह़ज़रते इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के साथ एक शख़्स बैठता था मगर कभी कुछ बोलता नहीं था। एक बार ह़ज़रते इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने उस से फ़रमाया : आप कभी कोई सुवाल क्यूं नहीं करते ? हमेशा चुप ही रहते हैं ? येह सुन कर उस ने सुवाल कर दिया : अच्छा येह बताइए कि रोज़ा कब इफ़्तार करना चाहिए ? फ़रमाया : जब सूरज ग़ुरूब हो जाए। वोह बोला : अगर आधी रात तक सूरज ग़ुरूब ही न हो तो ? येह सुवाल सुन कर ह़ज़रते

इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه हंस पड़े और फ़रमाया : आप का ख़ामोश रहना ही बेहतर था, मैं ने आप की ज़बान खुलवा कर ग़लती की। (तारीख़े बग़दाद, 14/251)

काश ! मैं गूंगा होता

ऐ आशिक़ाने रसूल ! देखा जाए तो नाबीना फ़ायदे में रहता है कि ग़ैर औरतें, फ़िल्में ड्रामे, किसी "हाफ़ पैन्ट" वाले शख़्स के खुले घुटने और रानें देखने, अमरद पर "मख़्सूस लज़्ज़त" वाली नज़र डालने वग़ैरा वग़ैरा गुनाहों से बचा रहता है, इसी तरह गूंगा भी ज़बान की बेशुमार आफ़तों से महफ़ूज़ रहता है। मुसलमानों के पहले ख़लीफ़ा, आशिक़े अकबर, ह़ज़रते सिद्दीक़े अकबर رَضِیَ اللهُ عَنْه (बतौरे आजिज़ी) फ़रमाते हैं : "काश ! मैं गूंगा होता मगर ज़िक्रुल्लाह की ह़द तक गोयाई (यानी बोलने की सलाहिय्यत) ह़ासिल रहती।" (مرقاۃ المفاتیح، 10/87)

काश ! येह गूंगी होती

"एह्याउल उ़लूम" में है : सह़ाबिए रसूल, ह़ज़रते अबू दर्दा رَضِیَ اللهُ عَنْه ने एक ज़बान दराज़ (यानी ज़ियादा बातें करने वाली) औरत देखी तो फ़रमाया : अगर येह गूंगी होती तो इस के ह़क़ में बेहतर था। (احیاء العلوم، 3/142)

घर अम्न का गहवारा कैसे बने !

अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे सब से आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के प्यारे सहाबी ह़ज़रते अबू दर्दा رَضِیَ اللهُ عَنْه के मुबारक इरशाद से ख़ुसूसन हमारी वोह इस्लामी बहनें दर्स ह़ासिल करें जो फ़ुज़ूल बातों, ग़ैर ज़रूरी सुवालों, बद गुमानियों और ग़ीबतों वग़ैरा से फ़ुर्सत नहीं पातीं, इस्लामी बहनें अगर सह़ीह़ मानों में ख़ामोश रहना सीख जाएं तो उन की घरेलू परेशानियां, रिश्तेदारों से नाचाक़ियां (यानी अन बन) और सास बहू की लड़ाइयां वग़ैरा बहुत

सारे मसाइल ह़ल हो जाएं और सारे का सारा ख़ानदान अम्न का गहवारा बन (यानी पुरसुकून हो) जाए क्यूंकि ज़ियादा तर घरेलू झगड़े ज़बान के ग़लत़ इस्तिमाल ही के सबब होते हैं।

सोशल मीडिया की एक क़ाबिले ग़ौर पोस्ट

सोशल मीडिया की एक तवज्जोह त़लब पोस्ट मामूली फ़र्क़ के साथ पेश की जाती है, किसी लड़की ने पोस्ट की : अगर शादी के बाद मां बाप को साथ रखने का ह़क़ बेटियों को मिल जाता तो मुल्क में एक भी "ओल्ड हाउस" न होता। इस पर किसी लड़के ने भी ख़ूब जवाब दिया कि अगर वोही बेटियां शादी के बाद सास सुसर ही को मां बाप मान लें तो मुल्क तो क्या पूरी दुनिया में एक भी ओल्ड हाउस बाक़ी न रहे।

इस पोस्ट में सिर्फ़ उन ॳौरतों को समझाने की कोशिश की गई है जो अपनी सास नन्दों वग़ैरा के सामने ख़ूब ज़बान चलातीं और घर का अम्न तहो बाला करती हैं, वरना मुॳाशरे में सुसराल के अन्दर ज़ुल्म सहने वाली ख़वातीन की भी एक तादाद मिलेगी।

सास बहू का झगड़ा निमटाने का नुस्ख़ा

सास अगर डांट डपट करती हो तो "बहू" को चाहिए कि सिर्फ़ और सिर्फ़ सब्र करे, जवाबन एक लफ़्ज़ भी न कहे और अपने शौहर को शिकायत भी न करे, मुंह भी न चढ़ाए और अपने बच्चों को झाड़ कर या बरतन वग़ैरा पछाड़ कर उन पर भी ग़ुस्सा न निकाले और मैके में भी कुछ न बताए, اِنْ شَآءَ الله आहिस्ता आहिस्ता घरेलू मसाइल ह़ल हो जाएंगे। इसी त़रह़ अगर कोई बहू अपनी "सास" से झगड़ा करती हो तो सास को चाहिए कि बिल्कुल जवाबी कार्रवाई न करे, सिर्फ़

ख़ामोशी इख़्तियार करे, घर के किसी फ़र्द ह़त्ता कि अपने बेटे को भी शिकायत न करे। اِنْ شَآءَ اللّٰہ इस कहावत : "एक चुप सौ सुख" के मुत़ाबिक़ सुख चैन पाएगी। जी हां ! अगर सह़ी मानों में सगे मदीना عُفِیَ عَنۡہُ के इस "नुस्ख़े" पर अ़मल किया गया तो اِنْ شَآءَ اللّٰہ जल्द ही सास बहू की लड़ाई ख़त्म हो जाएगी और घर अम्न का गहवारा (यानी राह़तों भरा) बन जाएगा।

ख़ामोशी की बरकत से दीदारे मुस्त़फ़ा

एक इस्लामी बहन ने दावते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की त़रफ़ से जारी कर्दा ख़ामोशी की अहमियत पर मब्नी सुन्नतों भरे बयान की ऑडियो कैसेट सुन कर ख़ामोश रहना शुरू कर दिया, तीन ही दिन में उन को अन्दाज़ा हो गया कि पहले वोह किस क़दर फ़ाल्तू बातें किया करती थीं ! اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ ख़ामोशी की बरकत से उन्हें अच्छे अच्छे ख़्वाब नज़र आने लगे, फ़ुज़ूल बातों से बचने की कोशिश के तीसरे दिन उन्हों ने मक्तबतुल मदीना की जारी कर्दा सुन्नतों भरे बयान की एक मज़ीद ऑडियो कैसेट बनाम "इत़ाअ़त किसे कहते हैं" सुनी। रात जब सोईं तो اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ कैसेट में बयान कर्दा एक वाक़िआ़ उन्हें ख़्वाब में दिखाई देने लगा ! "जंग का नक़्शा था, सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दुश्मन की जासूसी के लिए अपने प्यारे सह़ाबी ह़ज़रते ह़ुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ को रवाना करते हैं, वोह कुफ़्फ़ार के ख़ैमों के पास पहुंचते हैं तो उन्हें कुफ़्फ़ार के सरदार ह़ज़रते अबू सुफ़्यान (जो अभी तक मुसलमान नहीं हुए थे) खड़े हुए नज़र आते हैं, मौक़ा ग़नीमत जानते हुए ह़ज़रते ह़ुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ कमान पर तीर चढ़ा लेते हैं कि उन्हें सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह हुक्म याद आता है कि "कुफ़्फ़ार को ख़बर न हो" चुनान्चे अपने प्यारे आक़ा, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त (यानी फ़रमां बरदारी) करते हुए तीर चलाने से बाज़ रहते हैं, फिर ह़ाज़िर हो कर ताजदारे

रिसालत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बाबरकत में कारकर्दगी पेश करते हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه इस ख़्वाब में उन इस्लामी बहन को सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और दो सहाबए किराम رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا की साफ़ साफ़ ज़ियारत नसीब हुई, बाक़ी सब मनाज़िर धुन्दले (BLUR) नज़र आ रहे थे।" اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! सिर्फ़ तीन दिन की फ़ुज़ूल गोई से बचने की कोशिश से उन पर आक़ाए दो आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का बहुत बड़ा करम हो गया, उन का कहना था : बस मेरी तमन्ना है कि कभी भी मेरी ज़बान से कोई फ़ाल्तू लफ़्ज़ न निकले।

अल्लाह ! करूं मैं न कभी फ़ाल्तू बातें — बस ज़िक्र में गुज़रें मेरे दिन और मेरी रातें

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की किताब "गुफ़्तगू के आदाब" से आने वाली अब तक की 6 क़िस्तों को डाउनलोड करने के लिए नीचे दिए गए QR code स्केन कीजिए।

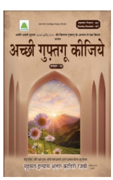

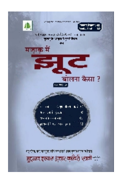

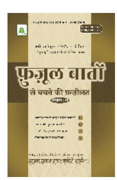

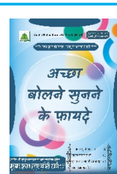

फ़ेहरिस्त

उन्वान	सफ़हा नम्बर
नाफ़रमानी का एक लफ़्ज़ भी दोज़ख़ में पहुंचा सकता है	02
बुरी सोह़बत ने बरबाद कर के रख दिया था	03
बात को फ़ुज़ूलिय्यात से पाक करने का बेहतरीन नुस्ख़ा	05
दुन्यवी बात मुंह से निकल जाए तो कुछ ज़िक्रुल्लाह कर लेना चाहिए	06
जब रह़मत की तवज्जोह हटा दी जाती है	06
हुस्ने अख़्लाक़ और दीन की समझ से मह़रूम	07
बोलने वाला बारहा पछताता है	07
ज़ियादा बोलने वाले को नदामत उठानी पड़ती है	08
जो तोल कर बोलता है फ़ुज़ूल बातों से बच जाता है	08
कैंसर की मरीज़ा सेह़तयाब हो गई	09
कैंसर का रूह़ानी इलाज	10
बेवुक़ूफ़ जब तक ख़ामोश रहता है पहचाना नहीं जाता	11
आधी रात तक अगर सूरज न डूबे तो ? (वाक़िआ)	11
काश ! मैं गूंगा होता	11
घर अम्न का गहवारा कैसे बने !	12
सोशल मीडिया की एक क़ाबिले ग़ौर पोस्ट	13
सास बहू का झगड़ा निमटाने का नुस्ख़ा	13
ख़ामोशी की बरकत से दीदारे मुस्त़फ़ा	14

अगले हफ़्ते का रिसाला

DAWATEISLAMI INDIA

FGN Channel Dekhte Rahiye

MAKTABATUL MADINA INDIA

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025